ॐ

ॐकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।

कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ।।

अनुवाद :- इच्छित पदार्थ को, मोक्ष को देनेवाले ॐकार का बिन्दु सहित योगी लोग हमेशा ध्यान करते है । ऐसे ॐकार को नमस्कार हो, नमस्कार हो ।।

गूढ़ार्थ :- ॐ = अ +इ + उ + म इन साढ़े तीन वर्णों के मिलाप से बना हुआ है ।

अ = ब्रह्मा, इ = विष्णु, उ = शंकर, म् = चन्द्रबिन्दी = ॐ

अ =जागृतावस्था, इ = स्वप्नावस्था, उ = सुषुप्ति, म् = समाधिअवस्था = ॐ

अ = सत्त्वशीलता, इ = राजसिक गुणावस्था, उ = तमोगुण प्रधानता, म् = निर्गुणावस्था = ॐ

अ = सर्जनशीलता, इ = संचालन कौशल्य, उ = संहार द्वारा ब्रह्माण्ड की समतुला बनाये रखना, म् = औदानीस्य - इन तीनों से ऊपर उठी हुई अवस्था = ॐ

अ = सत्, इ = चित् , उ = आनंद, म् = कल्याण और क्षम का वरदान = ॐ

इसीलिये समाधिकक्षा में पहुँचे हुए परमहंस योगीजन भी म् अर्थात् बिन्दु के प्रति सर्वाधिक निष्ठा, श्रद्धा सहित जुड़े रहना चाहते है जिसके फलस्वरूप सभी इच्छित पदार्थों की एवम् मोक्ष की प्राप्ति अनायास – सहज प्राप्य हो जाती है, इसलिये ॐकार को नाद साधना के लिये, ज्ञानसाधना के लिये, मंत्र साधना के लिये, होम हवन इत्यादि विधि विधानों की आहुतियां समर्पित करने के लिये एवम् देवाधिदेव महादेव की उपासना के लिये सर्वाधिक प्राधान्य दिया जाता है ।

ॐ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमोदाय पूर्णमेवाय वशिष्यते ।।

अनुवाद : वह (ब्रह्म) पूर्ण है, यह (विश्व) भी पूर्ण है, परिपूर्ण ऐसे परब्रम्ह में से पूर्ण, ऐसा विश्व-जगत प्रगट या अविर्भूत होता है । उस परमपूर्ण परब्रह्म में से यदि पूर्ण ऐसा यह जगत / संसार निकाल भी लिया जाए फिर भी पूर्ण परब्रह्म ही अवशेष के रूप में बचता है ।

गूढ़ार्थ : विविध नाम और रूप की उपाधियों से दृश्यमान ऐसा यह विश्व परमपूर्ण परब्रह्म में से प्रगट होते हुए भी परब्रह्म की पूर्णता में किसी प्रकार की कमी नहीं आती, और जो दृश्यमान नामरूप उपाधियुक्त विश्व है, वह भी परब्रह्म का ही सर्जन होने के कारण अनुस्युत रूप में अर्थात् छिपकर (in a concealed / hidden form) ब्रह्म ही प्रकट हुआ है, इसलिए परब्रह्म का सर्जन यह विश्व भी पूर्ण ही है । अर्थात् परब्रह्म के स्वरूप में या विश्व के स्वरूप में परब्रह्म कभी अपने पूर्णत्व का त्याग नहीं करता । इसिलिए पूर्णत्व में अधिक और पूर्णत्व बढ़ाया जाये या घटाया जाये, इस पूर्णत्व की मात्रा में कोई विकृति नहीं होती ।

संक्षेप में हमें सर्वत्र परब्रह्म का विलास परखने की भावनात्मक कुशलता एवम् श्रद्धायुक्त निर्णयात्मक आध्यात्मिक दृष्टि – संपन्नता प्राप्त करनी चाहिए ।

ॐ

ब्रह्मानंदं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्

द्वन्द्वातीतं गगन सद्दशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमल मचलं सर्वधी साक्षी भूतम्

भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ।।

अनुवाद :- ब्रह्म में आनन्द प्राप्त करनेवाला, अथवा ब्रह्मानंद का साकार स्वरूप, परम सुखदाता, सिर्फ / केवल ज्ञानस्वरूप, दुन्यवी द्वन्दों से परे रहनेवाला, आसमान के समान निर्लेप, "तत्त्वमसि" जैसे परम गहन वेद वाक्यों के लक्षार्थ स्वरूप, एकमेव सदा नित्य / शाश्वत विमल (पापों से रहित) अचल, सभी की बुद्धि के साक्षी स्वरूप, सांसारिक संवेदनाओं से रहित तथा तीन गुणों से परे उठा हुआ ऐसा जो है, उस सद्गुरू को मैं प्रणाम करता हूँ ।

अर्थ :- ब्रह्मानन्द = जीव, जगत और जगदीश के बारे में अंतिम सत्यार्थ की अनुभूति – Realization होने के कारण मिलने वाला आनन्द ब्रह्मानंद कहा जाता है ।

द्वाद्वातीतं - द्वन्द = सुख - दुःख, जय - पराजय, शीत - उष्ण, हर्ष - शोक, इष्ट - अनिष्ट, मान - अपमान, निंदा - स्तुति, राग - द्वेष, मोह - उदासीनता, इत्यादि जोड़ो से जो उपर उठा हुआ रह सकता है, उसे द्वन्द से अतीत - पर इन दोनों में से किसी भी प्रकार की स्थिति या भावदशा को अपने मन पर हावी नहीं होने देता है ।

सदृश – समान:-

तत्त्वमसि = तत् + त्वम् + असि = वह / तत् अर्थात् परब्रह्म, त्वम = तुम, जीवात्मा हो अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा के बीच कोई दूरी या असामनता नहीं है, ऐसा समझने के लिये अपने आपको सदा तत्पर रखा हो ।

धी = बुद्धि, जो सब की बुद्धि का साक्षी स्वरूप है ।

भावातीतं = ऐहिक अर्थात् दुन्यवी संवेदनाओं से परे रहनेवाला जो है, त्रिगुण = सत्त्व, रजस, तमस इन तीन गुणों से ऊपर उठा हुआ हो ।